धाकड़ चालबाज़

फ़िनलैंड की लोककथा

मौली, हिंदी : विदूषक

धाकड़ चालबाज़

फ़िनलैंड की लोककथा

मौली, हिंदी : विदूषक

किसी ज़माने में फ़िनलैंड के एक गाँव में, अल्डर नाम का एक चालबाज़ रहता था. लोग उसे चालबाज़ अल्डर के नाम से बुलाते थे. अल्डर लोगों को उल्लू बनाने में बहुत माहिर था.

पर उसी गाँव में एक आदमी था जिसे लगता था कि अल्डर उसे उल्लू नहीं बना सकता था.

वो आदमी हमेशा एक बड़ी बकरी पर सवारी करता था. इसलिए लोग उसे बकरी-सरदार बुलाते थे. एक दिन बकरी-सरदार की मुलाक़ात अल्डर से हुई. उस समय अल्डर एक भोजपत्र के पेड़ से टिककर खड़ा था.

“अल्डर, तुम चालबाज़ ज़रूर हो,” बकरी-सरदार ने कहा. “पर तुम मुझे चकमा नहीं दे सकते हो!”

“मैं तुम्हें भी उल्लू बना सकता हूँ,” अल्डर ने कहा, “पर मैं अपना चालबाजी का थैला अभी घर भूल आया हूँ.”

“अरे, फिर जल्दी से अपना चालबाजी का थैला घर से ले आओ. फिर हम देखेंगे कि कौन किसे उल्लू बनाता है!” बकरी-सरदार ने कहा.

“मेरे लिए वो करना अभी संभव नहीं है,” अल्डर ने कहा, “क्योंकि मैं अभी इस भोजपत्र के पेड़ को गिरने से रोके हूँ. अगर मैं उसे छोड़कर गया तो फिर पेड़ गिर पड़ेगा.”

“चलो तब तक मैं पेड़ को गिरने से रोकता हूँ,” बकरी-सरदार ने कहा. फिर बकरी-सरदार पेड़ को सहारा देकर खड़ा रहा और अल्डर उसकी बकरी पर सवार होकर गाँव चला.

कुछ देर बाद बकरी-सरदार पेड़ को पकड़े-पकड़े थक गया, पर चालबाज़ अल्डर अपना थैला लेकर वापिस ही नहीं आया.

अंत में थककर बकरी-सरदार पेड़ छोड़कर गाँव की ओर चला. उसे तब बहुत ताज्जुब हुआ जब पेड़ बिल्कुल भी नहीं गिरा. उसने कहा, “अल्डर ने एक बार मुझे ज़रूर चकमा दिया है, पर वो आगे से मुझे पागल नहीं बना नहीं बना पाएगा.”

फिर वो बकरी-सरदार दौड़ा-दौड़ा गाँव वापिस गया. वो अल्डर और अपनी बकरी को ढूँढना चाहता था.

रास्ते में उसे एक ताल दिखा. अल्डर ने तालाब में एक बकरी की खाल फेंकी थी. वो खाल ताल के बीचो-बीच तैर रही थी. जब बकरी-सरदार ने उस खाल को देखा तो उसने कहा.

“लगता है मेरी बकरी ताल में तैर रही है!”

फिर उसने अपना कोट उतारा और जूते उतारे. उसके बाद वो बकरी को वापिस लाने ताल में कूदा.

जब बकरी-सरदार ताल के बीच में पहुंचा तब अल्डर, बकरी लेकर पेड़ों के पीछे से निकलकर बाहर निकला.

उसने बकरी-सरदार का कोट और जूते उठाए. फिर वो बकरी पर सवार होकर गाँव की ओर चला.

जब बकरी-सरदार को अपना कोट और जूते गायब मिले तो वो चिल्लाया, “अल्डर ने मुझे दो बार पागल बनाया है, पर वो अब मुझे उल्लू नहीं बना पाएगा.”

उसके बाद अल्डर, बकरी, कोट और जूतों को खोजने गाँव की तरफ चला.

कुछ देर चलने के बाद उसे अपना एक जूता सड़क पर पड़ा दिखा. उसने कहा, “एक जूते से भला क्या फायदा, दोनों जूते होते तो अच्छा होता.”

फिर वो उस अकेले जूते को छोड़कर गाँव की तरफ वापिस लौटा.

कुछ देर बाद उसे सड़क पर दूसरा जूता भी दिखाई पड़ा. वो दूसरे जूते को उठाकर पहले जूते को लाने के लिए वापिस लौटा. पर पहला जूता अब वहां से गायब था क्योंकि चालबाज़ अल्डर, उसे वहां से पहले ही ले जा चुका था.

बकरी-सरदार ने अपनी मुट्ठी भींची और ज़ोर से चिल्लाया. "अल्डर ने मुझे तीन बार चकमा दिया है, पर वो आगे से मुझे उल्लू नहीं बना पायेगा."

उसके बाद वो अल्डर, बकरी, कोट और जूतों को खोजने गाँव की तरफ चला.

अंत में बकरी-सरदार, अल्डर के घर पहुंचा.

जब अल्डर ने उसे आते हुए देखा तब उसने अपने थैले में से एक खरगोश निकालकर अपनी बीबी को दिया.

फिर अल्डर अपनी छत के ऊपर वाले छोटे कमरे में जाकर छिप गया.

अल्डर के पत्नी दरवाज़े पर खरगोश के साथ गई.

बकरी-सरदार ने पूछा, “क्या अल्डर घर पर है?”

“नहीं,” अल्डर की बीबी ने कहा, “वो जंगल गए हैं. आप अन्दर आइए मैं उन्हें लाने के लिए अभी इस खरगोश को भेजती हूँ.”

“फिर वो उस खरगोश को लेकर अन्दर गई.

पत्नी ने ऊपर के कमरे में जाकर खरगोश अल्डर को थमाया. फिर वो दौड़ी हुई दुबारा बकरी-सरदार के पास आई.

कुछ देर बाद अल्डर दरवाज़े पर आया. उसके हाथ में वही खरगोश था. उसने अपनी बीबी से कहा, “वो खरगोश मुझे बुलाने आया था. इसलिए मैं दौड़ा-दौड़ा घर आया हूँ.”

बकरी-सरदार उस खरगोश को बड़े आश्चर्य से देखता रहा.

“तुम्हारे पास तो बड़े गज़ब का खरगोश है,” बकरी-सरदार ने कहा. “क्या तुम उसे मुझे बेंचोगे?”

“तुम चाहो तो पच्चीस रूबल में उसे खरीद सकते हो,” अल्डर ने कहा.

फिर बकरी-सरदार ने अल्डर को पच्चीस रूबल दिए और अल्डर ने बकरी-सरदार के हाथों में उस खरगोश को थमाया.

फिर बकरी-सरदार उस खरगोश को लेकर ख़ुशी-ख़ुशी अपने घर गया.

घर पहुँचने के बाद बकरी-सरदार ने पत्नी से सूप बनाने को कहा.

उसने कहा, “मैं लकड़ी काटने के लिए जंगल जा रहा हूँ. जब सूप तैयार हो जाए तो तुम इस खरगोश को छोड़ देना. वो मुझे जंगल से बुलाकर ले आएगा.”

उसके बाद बकरी-सरदार कुल्हाड़ी लेकर जंगल गया. वो बहुत देर तक लकड़ी काटता रहा. अंत में वो थककर एक दम पस्त हो गया. पर खरगोश उसे बुलाने के लिए नहीं आया.

अंत में वो घर वापिस गया. उसने अपनी पत्नी से पूछा, “तुमने उस खरगोश को मुझे बुलाने के लिए क्यों नहीं भेजा?”

“मैंने दरवाज़े के बाहर खरगोश को छोड़ा और उसे तुम्हारे पास जाने को कहा. पर वो खरगोश सीधा अल्डर के घर की तरफ भागा.”

फिर बकरी-सरदार ने अपनी मुट्ठियाँ भींची और वो चिल्लाया, “अल्डर ने मुझे चार बार पागल बनाया है. पर अब मैं दुबारा कभी उल्लू नहीं बनूँगा.”

फिर वो अपनी बकरी, कोट, जूतों को पैसों को लेने अल्डर के घर चला.

जब अल्डर ने बकरी-सरदार को अपने घर की तरफ आते देखा, तब वो कुछ चांदी से सिक्के लेकर अस्तबल की तरफ दौड़ा.

उसने उन सिक्कों को घोड़े की पूँछ में छिपा दिया.

फिर वो घोड़े को काले चने खिलाने लगा.

बकरी-सरदार ने अल्डर की पत्नी से पूछा, "क्या अल्डर घर पर है?"

"हाँ," अल्डर की पत्नी ने कहा, "वो अस्तबल में हैं."

बकरी-सरदार जब अस्तबल में पहुंचा तो अल्डर घोड़े को काले चने खिला रहा था.

"तुम अपने घोड़े तो काले चने क्यों खिला रहे हो?"

"मैं आपको अभी दिखता हूँ, कि मैं अपने घोड़े को काले चने क्यों खिला रहा हूँ," अल्डर ने कहा.

फिर अल्डर ने घोड़े को एक छड़ी से छुआ. तब घोड़े ने अपनी पूँछ हिलाई और फिर चांदी के सिक्के नीचे गिरने लगे.

बकरी-सरदार चांदी के सिक्कों को इस तरह गिरते हुए देखकर एकदम हक्का-बक्का रह गया.

“तुम्हारा घोड़ा तो बड़े गज़ब का है,” बकरी-सरदार ने कहा. “क्या तुम उसे बेंचोगे?”

“उसके लिए आपको पांच सौ रूबल देने होंगे,” अल्डर ने कहा.

फिर बकरी-सरदार ने अल्डर को पांच सौ रूबल दिया और अल्डर ने बकरी-सरदार को अपना घोड़ा दिया.

फिर बकरी-सरदार घोड़े पर सवार होकर घर वपिस चला.

घर वापिस पहुंचकर उसने अपनी पत्नी से कहा, “देखो मैं कितने गज़ब का घोड़ा खरीदकर लाया हूँ!”

फिर बकरी-सरदार ने घोड़े को छड़ी से छुआ. घोड़े ने अपनी पूँछ ज़रूर हिलाई पर कोई भी सिक्का नीचे नहीं गिरा.

बकरी-सरदार ने एक बार फिर से अपना सर पीटा, “अल्डर मुझे पांच बार ठग चुका है, पर अब मैं उसके चकमे में नहीं आऊँगा.”

फिर वो अपनी बकरी, कोट, जूते और रूबल लेने अल्डर के घर चला.

रास्ते में बकरी-सरदार को उसका छोटा भाई मिला. उसने अपने भाई को पूरी राम कहानी सुनाई कि किस तरह अल्डर ने उसकी बकरी, कोट, जूते और रूबल हथिया लिए थे.

उसके भाई ने कहा, "मेरे पास एक बड़ा बोरा है. हम अल्डर को पकड़कर इस बोरे में बंदकर के उसे नदी में फेंक देंगे. फिर अल्डर कभी किसी को उल्लू नहीं बना पायेगा.

उसके बाद बकरी-सरदार और उसके भाई ने अल्डर को बोरे में डाला. उन्होंने बोरे का मुंह रस्सी से बांधा और फिर उसे नदी में फेंक दिया.

कुछ देर बाद बोरा तैरता हुआ किनारे पर आ गया. फिर बकरी-सरदार और उसके भाई ने एक लम्बे बांस से बोरे को दुबारा नदी के बीच में ढकेला.

पर अल्डर की जेब में एक चाकू था.

उसने बोरे की रस्सी काटी और बाहर निकल आया.

फिर उसने बोरे को पुआल और पत्थरों से भरा और दुबारा से उसे सिला.

उसके बाद अल्डर एक पेड़ के पीछे छिप गया. उसने बकरी-सरदार और उसके भाई को एक लम्बा बांस लाते हुए देखा. उन्होंने बोरे को नदी के बीच दुबारा ढकेला.

उसके बाद अल्डर दो दिनों तक गाँव नहीं आया.

फिर उसने दस गायें खरीदीं. तीसरे दिन वो उन गायों को हांकते हुए बकरी-सरदार के घर के सामने से निकला.

बकरी-सरदार और उसका भाई, अल्डर और उसकी दस गायों को, आँखें फाड़-फाड़ कर देखते रहे.

"अल्डर, तुम यह गायें कहाँ से लाये?"

"अरे," अल्डर ने कहा, "मुझे यह गायें पानी के नीचे मिलीं. वहां पर सैकड़ों ऐसी गायें थीं, पर मैं सिर्फ दस गायें ही ला पाया."

"मुझे भी बोरे में बांधकर नदी में फेंको," बकरी-सरदार ने कहा. "मुझे भी कुछ गायें चाहिए."

फिर अल्डर ने बकरी-सरदार को बोरे में बांधकर नदी में फेंका.

कुछ देर बाद बकरी सरदार चीखने-चिल्लाने लगा. तब अल्डर ने बकरी-सरदार के भाई से कहा, "देखो, वो गायों को बुला रहा है."

फिर बकरी-सरदार के भाई ने भी कहा, “मुझे भी एक बोरे में बाँधकर नदी में फेंकों. मैं भी वहां से कुछ गाय लेकर आऊँगा.”

फिर अल्डर ने उसे भी बोरे में बांधकर नदी में फेंका.

कुछ देर बाद बकरी-सरदार का भाई भी चीखने-चिल्लाने लगा.

कुछ देर बाद अल्डर ने एक लम्बे बांस से दोनों बोरों को नदी से बाहर निकाला. उसने बोरों के मुंह की रस्सी काटी जिससे बाद दोनों लोग बोरों में से बाहर निकले.

अल्डर उस दोनों को देखकर बहुत ज़ोरों से हंसा. उसने बकरी-सरदार से पूछा, “बताओ, मैंने तुम्हें कितनी बार उल्लू बनाया?”

“तुमने मुझे छह बार पागल बनाया. पर अब मैं फिर से दुबारा उल्लू नहीं बनना चाहता हूँ.”

उसके बाद अल्डर ने बकरी-सरदार को उसकी बकरी, कोट और जूते वापिस लौटा दिए.

उसने रूबल अपने पास ही रखे, क्योंकि वो चाहता था कि बकरी-सरदार यह हमेशा याद रखे कि चालबाज़ अल्डर ने उसे छह बार उल्लू बनाया था.